शोध मंथन Vol. XIV No.IV Oct.-Dec. 2023 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 8.870 (SJIF)

भारतीय स्वतंत्रता के पूर्व रूस के साथ सांस्कृतिक, सामाजिक और राजनीतिक संबंधों की एक झलक

प्राप्तिः 19.12.2023
स्वीकृतः 25.12.2023

89

डॉ० मंदाकिनी राय
पी०एच०डी०, पाश्चात्य इतिहास विभाग
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ
ईमेलः

मुख्य बिन्दु
टॉलस्टाय, रवींद्रनाथ टैगोर, भारत सोवियत, औपनिवेशिक, सांस्कृतिक, कम्युनिज्म।

प्रस्तावना

भारत एशिया महाद्वीप का एक महान देश है जिसकी संस्कृति भी अत्यन्त प्राचीन है, तथा जिसके विविध ऐतिहासिक विकासक्रम ने उसमें असाधारण रूप से बहुविध सामाजिक परिस्थितियों को जन्म दिया है। प्रारंम्भिक रूसी व्यापारी जिसने भारत की यात्रा की वो अफनासी नितकिन था, जिसकी चर्चा प्रमुखता से की जाती है। नितकिन ने 15वीं शताब्दी के मध्य में दक्षिण भारतीय राज्यों की यात्रा की। अपने यात्रा प्रलेखों में नितकिन ने भारतीय लोगों एवं यहां के अनुभवों के बारे में विस्तार से बताया है॰ भारत उन देशों में से है जो सबसे पहले उपनिवेशवाद के शिकार बने तथा जिन्होने सबसे पहले औपनिवेशिक दासता के विरुद्ध संघर्ष छेड़ा और स्वभाविक रूप से वैज्ञानिक समाजवाद के प्रवर्तक कार्ल मार्क्स, फ्रेडरिक एंगेल्स और व्लादिमिर इल्यीच लेनिन का ध्यान अपनी तरफ खींचा। रूस का प्रगतिशील समाज भारत में हो रहे 1857 की बगावत में उत्सुकता से रूचि ले रहा था। ऐसे बहुत से उल्लेखनीय रूसी लेखक थे जिन्होंने सर्मपित भाव से भारतीय समस्याओं की बात की, जिनका सामना भारत कर रहा था।

स्वतंत्रता के पूर्व भारत–रूस सांस्कृतिक, सामाजिक और राजनीतिक संबंध

भारत एशिया महाद्वीप का एक महान देश है जिसकी संस्कृति भी अत्यन्त प्राचीन है, तथा जिसके विविध ऐतिहासिक विकासक्रम ने उसमें असाधारण रूप से बहुविध सामाजिक परिस्थितियों को जन्म दिया है। भारत, रूस, मध्य एशिया, पश्चिमी एशिया एवं काकेशस के लोगों के सांस्कृतिक एवं वाणिज्यिक सम्बन्ध अतिप्राचीन काल से रहे है। 12वीं शताब्दी के साहित्यिक साक्ष्यों से पता चलता है कि इन पड़ोसी देशों के लोगों के मध्य सांस्कृतिक एवं वाणिज्यिक सर्पक थे। प्रारंम्भिक रूसी व्यापारी जिसने भारत की यात्रा की वो अफनासी नितकिन था, जिसकी चर्चा प्रमुखता से की जाती है। नितकिन ने 15वीं शताब्दी के मध्य में दक्षिण भारतीय राज्यों की यात्रा की। एक यात्री के रूप में नितकिन लम्बे समय तक दक्षिण भारत में रहा। अपने यात्रा प्रलेखों में नितकिन ने भारतीय लोगों एवं यहां के अनुभवों के बारे में विस्तार से बताया है'[1] 18वीं शताब्दी के तिमाही में रूसी यात्री एफ. एस. येफेमेव और जी. एस. लेबदेव, दोनो यात्री लम्बी अवधि तक भारत में रहे। भारत के बारे में इनके दिये हुये बृहद यात्रा विवरण की विलक्षण प्रशंसा की गयी। इन विवरणों के कारण रूसी लोगों का भारतीय समाज के सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक जीवन के बारे में जानने की रूचि जागृत होने लगी।

जी. एस. लेबेदेव अनेक वर्ष तक बंगाल में रहे थे। इन्होंने कलकत्ता के दोमताला लेन (वर्तमान में इसे इजरा स्ट्रीट के नाम से जाना जाता है) में 27 नवम्बर 1795 को यूरोपीय शैली के आधार पर भारत में 'बंगाली थिएटर' बनाया था। रूस वापस जाने के बाद लेबेदेव ने इस बात पर बल दिया कि भारतीय समाज की संस्कृति एवं वैज्ञानिक अध्ययन कि आवश्यकता है जिससे कि दोनों देशों के मध्य सांस्कृतिक आदान–प्रदान कि योजना प्रतिपादित की जा सके।

भारत उन देशों में से है जो सबसे पहले उपनिवेशवाद के शिकार बने तथा जिन्होंने सबसे पहले औपनिवेशिक दासता के विरुद्ध संघर्ष छेड़ा और स्वभाविक रूप से वैज्ञानिक समाजवाद के प्रवर्तक कार्ल मार्क्स, फ्रेडरिक एंगेल्स और व्लादिमिर इल्यीच लेनिन का ध्यान अपनी तरफ खींचा। 19वीं शताब्दी के मध्य की भारत में घटी घटनाओं ने भारत के प्रति रूसी जनमानस की रुचि को बढ़ाना प्रारम्भ कर दिया था। सन् 1851 में मास्को विश्वविद्यालय ने अपने प्राच्यभाषा विभाग के अंतर्गत भारत की प्राथमिक भाषाओं के अध्ययन हेतु एक शाखा की स्थापना कर दी थी। सन् 1855 में सेन्ट पीटर्सबर्ग विश्वविद्यालय में संस्कृत के एक प्रोफेसर का पद निर्मित किया गया। रूसी भाषा के प्रसिद्ध पत्रों में सन् 1857 के विद्रोह से सम्बन्धित घटनाओं को प्रमुखता से प्रकाशित किया जाता था। यहां तक कि लियो टॉलस्टॉय ने भी 1857 के विद्रोह के दौरान दिल्ली, कानपुर, लखनऊ और अन्य शहरों में घटित हो रही घटनाओं के बारे में गहराई से अध्ययन किया था। सैन्य विद्रोह के क्रूरता पूर्वक दमन की निन्दा करते हुए टॉल्सटॉय ने कहा कि ब्रिटिश सरकार द्वारा अपनाया गया दमनात्मक रास्ता ग्रेट ब्रिटेन की बर्बरता का उदाहरण था।

रूस का प्रगतिशील समाज भारत में हो रहे 1857 के बगावत में उत्सुकता से रूचि ले रहा था। ऐसे बहुत से उल्लेखनीय रूसी लेखक थे जिन्होंने समर्पित भाव से भारतीय समस्याओं की बात की, जिनका सामना भारत कर रहा था। बहुप्रसिद्ध लेखक एन. ए. दोबूलीबोव उन लेखको में से एक थे जिन्होंने एक किताब लिखी, जिसका नाम था 'ए गलान्स एट द हिस्ट्री एण्ड प्रेजेन्ट सिचुएशन इन ईस्ट इण्डिया'। इस किताब में उन्होंने 1857 के विद्रोह के दौरान ब्रिटिश शासन द्वारा किये गये पाशविक कृत्यों के बारे में विस्तार से लिखा। प्रसिद्ध व्याकरण विद् आइ. पी मीनेव ने सन् 1874 से 1886 के मध्य तीन बार भारत की यात्रा की और भारतीय लेखकों से, जैसे बंकिम चन्द चट्टोपाध्याय आर, जी. भण्डारकर के. टी. तेलंग. सुरेन्द्रनाथ बनर्जी से अपना व्यक्तिगत संपर्क स्थापित किया। सन् 1885 में जब कॉग्रेस की स्थापना हुई उस समय प्रो० मीनेव बम्बई में उपस्थित थे। उन्होंने इस घटना का विवरण अपनी डायरी में लिखते हुए ये कहा कि यह घटना 'भारत में राष्ट्रवाद की भावना के विकास तथा भारत के एकीकरण' का प्रतीक था। ब्रिटिश सरकार की पूर्व में साम्राज्यिक संकट की स्थिति को देखते हुए ही कज्जाकी रूसियों ने मध्य एशिया में विस्तार करना प्रारम्भ कर दिया था। ब्रिटिश सरकार एवं प्रेस ने अधिकांशतः रूसियों के इस आलोचनात्मक कार्य को ''रूसी भय'' से जोड़ कर विश्लेषित करने की नीति बना ली थी।

अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध एवं बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ से भारत में रह रहे ब्रिटिश शासक इस बात से भयभीत हो रहे थे कि भारत में रूसी आक्रमण छन के आ रहे रूसी विचारधारा के माध्यम से हो रहा है। सामान्यतः भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस उपरोक्त ''रूसी धमकी'' या ''रूसी भय'' का सर्मथन नही करती थी। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का तीसरा वार्षिक अधिवेशन 1887 के दिसम्बर माह के अंत में मद्रास में हुआ। उसमें विपिन चन्द पाल ने इस बात पर प्रकाश डालते हुए कहा कि

''मैं रसोफोबिस्ट नहीं हूँ। मैं ये विश्वास नहीं करता कि रूस का तत्कालिक उद्देश्य भारत में आक्रमण करना और उसको जीतना अपनी प्रगतिवादी नीतियों से प्रेरित करना है।'' भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सातवें सत्र में बी.जी तिलक और दिनशों वाचा जैसे बड़े नेताओं ने ब्रिटिश सरकार की अग्रवर्ती नितियों पर प्रश्न उठाया और रूसी भय को निराधार बताया। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के 1899 और 1906 के मध्य हुए वार्षिक अधिवेशन के कार्यविवरण व तथ्यों से लगता है कि ब्रिटिश सरकार द्वारा फैलायी गयी ''रूसी भय'' के पक्ष में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस नहीं थी।

भारत–रूस सम्बन्धों ने बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में एक नए युग में प्रवेश किया। रूस के एकतंत्रीय या निरंकुश शासकों के विरुद्ध 1905 और 1917 की रूसी क्रांतियों ने भारत में भी ब्रिटिश शासको के विरुद्ध चल रहे भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन को धीरे–धीरे नया एक आयाम देना प्रारम्भ कर दिया था। गांधी जी, जब दक्षिण अफ्रीका में भारतीय मूल के लोगों के लिये आन्दोलन कर रहे थे उस समय दोनो देशों की स्थितियां एक समान रूप से प्रभावित थी। 1 जुलाई 1905 को उन्होंने अपनी पत्रिका इण्डियन ओपिनियन में लिखाः

''जिस प्रकार से हम बेचारे हैं उसी प्रकार से रूसी लोग भी बेचारे हैं। हमारी कोई अभिव्यक्ति या नियन्त्रण राजकीय मामलों में नही है बिना आपत्ति कर अदा करते है यही सच रूसीयों का भी है''।

महात्मा गांधी ने रूस के साथ महान लेखक लियो टॉलस्टाय (जिसे सिखने वाला व्यक्ति कहा गया) के माध्यम से गहरे सम्बन्ध विकसित किये। वह टॉलस्टाय को अपने गुरु के रूप में देखते थे और उन्होंने दक्षिण अफ्रीका में अपने मुख्य निवास का नाम टॉलस्टाय फार्म रखा था। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन (1906) के अध्यक्ष दादाभाई नौरोजी ने भी अपने भाषण में रूस की घटनाओं का उल्लेख किया और विशेष रूप से रूस का उदाहरण देते हुए उन्होंने कांग्रेस की ओर से पहली बार भारत के लिए स्वशासन की मांग पेश की। उसी वर्ष नासिक के एक सभा में बोलते हुए बाल गंगाधर तिलक ने 'आन्दोलन के रूसी तरीकों की चर्चा की और ''स्वाधीनता'' के लिए रूसी जनता के सफल संघर्ष के बारे में बताया। उन वर्षों की जानी मानी भारतीय महिला क्रांतिकारी भीका जी कामा ने 1907 में स्टुटगार्ट की अन्तर्राष्ट्रीय समाजवादी कांग्रेस में सीधे–सीधे कहा कि वह दिन दूर नहीं, जब भारत की जनता जगेगी और हमारे रूसी साथियों द्वारा दिखाये गये रास्ते पर चलेगी जिन्हें हम अपना बहुत ही बंधुत्वपूर्ण अभिवादन भेजते है''।

एशिया के जागरण का स्वागत करते हुए और पूर्व के राष्ट्रों में उभर रहे स्वतंत्रता संघर्ष ने विश्व क्रांतिकारी प्रक्रिया की नयी महत्वपूर्ण शक्ति को देखते हुए लेनिन ने बीसवीं सदी के आरम्भ में इस बात पर जोर दिया कि अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर आन्दोलन इस संघर्ष को अपना सर्वोच्च स्तर पर समर्थन दे और साम्राज्यवाद की उपनिवेशवादी नीति का सकिय विरोध करे। इसके लिये अवसरवादियों के प्रभाव से मुक्त होना जरूरी था जो उवनिवेशवादी राष्ट्रों के मजदूर आन्दोलनों पर विशेष रूप से छाये हुए थे। जो दक्षिणपंथी अवसरवादी थे वो मजदूर वर्ग को पूरी तरह पूंजीपति वर्ग के वैचारिक राजनितिक प्रभाव में लेने के लिये कटिबद्ध थे। इन बातों के अतिरिक्त अंधराष्ट्रवाद और औपनिवेशिक प्रभुत्व के औचित्य प्रतिपादन के तत्व कम नहीं थे।

'1914–1918 का पहला विश्व युद्ध साम्राज्यवाद के अंतर्विरोधों का विस्फोट था। उसने विश्व पूंजीवादी प्रणाली के आम संकट के विकास को बढ़ावा दिया। उन वर्षों में निकट आ चुकी सर्वहारा क्रांति की रणनीति तथा कार्यनीति को तैयार करते हुए लेनिन ने राष्ट्रीय और औपनिवेशिक

प्रश्न पर अनेक महत्वपूर्ण रचनाएं लिखी जिनमें राष्ट्रीय प्रश्न के संबंध में आलोचनात्मक टिप्पणियां राष्ट्रों के आत्मनिर्णय के अधिकार समाजवादी क्रांति और आत्मनिर्णय विशयक बहस के निष्कर्ष मार्क्सवाद के विद्रूपीकरण और आर्थिक साम्राज्यवाद के बारे में इत्यादि।

महान अकटूबर क्रांति की विजय जिसने विश्व शक्ति में मेहनतकश और उत्पीड़ित का, मजदूरों का पलड़ा भारी बनाया और खुद को उपनिवेशों और पराधीन देशों के आन्तरिक विकास जिसके फलस्वरूप राष्ट्रीय स्वधीनता आन्दोलन ने तेजी पकड़ी, इन दोनो कारणों ने पूर्व के राष्ट्रों के इतिहास में एक गुणात्मक रूप से नये चरण के सूत्रपात को संभव बनाया और विश्व के विकास में उन्हें नयी सक्रिय भूमिका प्रदान की। एक स्थान पर पूर्व के जनसाधारण की चर्चा करते हुए लेनिन ने 1921 में लिखाः

"1914–1918 के साम्राज्यवादी युद्ध और रूस में सोवियत सत्ता कि स्थापना के फलस्वरूप यह जनता विश्व राजनीति में अधिकाधिक सक्रिय हो रही है और साम्राज्यवाद के क्रांतिकारी विनाश का सक्रिय साधन बनती जा रही है"

आधुनिक भारतीय साहत्यि एवं इतिहास में रवीन्द्रनाथ ठाकुर का स्थान अग्रणीय है उनकी गिनती स्वतंत्र भारत कि संस्कृति की नीव रखने वालों में होती है। सोवियत संघ में जनता उनको एक महान लेखक और सांस्कृतिक कार्यकर्ता के रूप में जानती है। 1918 में रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने क्रांतिकारी रूस की तुलना उस भोर के तारे से की जो "नवयुग के प्रभात का संदेश लेकर आता है"। रविन्द्रनाथ टैगोर यदि गीतांजली के रचयिता ना होते और भारतीय आध्यात्मिक परंपरा के खोजकर्ता न होते तो वह सोवियत संघ की यात्रा को तीर्थयात्रा की भाँति कभी ना लेते। एक पत्र में उन्होने लिखा कि–

''अगर मैं रूस नही गया होता तो मेरे जीवन की तीर्थ यात्रा अधूरी रह जाती। यहां कि गतिविधियों को भला–बुरा कहने के पूर्व जो पहली चीज मुझे आकर्षित करती है, वह उनका गजब का साहस। जो रूढ़िया आदमी से एक हजार तरीके से चिपकी हुई हैं इतने सारे घर, इनके अनगिनत द्वार और उनकी रखवाली में जुटे असंख्य पहरेदारः पर्वत शिखरों से ऊंचे और सदियों से जमा किए गए करों से भरे खजाने, उन्हें रूस में जड़ों से उखाड़कर फेंक दिया गया है, यहां कोई भय नही, दिल–दिमाग में कोई हिचक नहीं''।

महात्मा गांधी जिस समय दक्षिण अफ्रीका में मानव के मूल अधिकारों के हिन्दुस्तानियों के संघर्ष का नेतृत्व कर रहे थे ऐसे में ये बात सामान्य थी कि जिसे वह अपना गुरू मानते है उसके साथ संपर्क स्थापित करें। इसलिए उन्होंने टॉलस्टॉय को एक विस्तृत पत्र लिखा। यह पत्र गांधी जी ने तब भेजा था जब वह ब्रिटिश सरकार से वार्ता के लिए गये थे। उन्होंने इसमें इस बात पर जोर दिया था कि अफ्रीका के नस्लवादियों के शासन में अपने देश के नागरिकों की दयनीय स्थिती को बताया और इस बात पर जोर देते हुए लिखा कि मुश्किलें और मुसीबतें चाहे कैसी भी क्यों न उठानी पड़े वे हिन्दुस्तानियों को किस्मत के आगे घुटने टेकने पर मजबूर नहीं कर सकती।

भारत के संदर्भ में समाजवाद को गांधी जी ने सामाजिक विकास लिए अंतिम लक्ष्य के रूप में स्वीकारा था। उनके विचार में कम्युनिज्म समाजवाद के अनुरूप था गांधी जी द्वारा 1946 में कहे गये ये शब्द स्वयं में महत्वपूर्ण है कि मैं अपने को कम्युनिस्ट भी मानता हूं। मेरा कम्युनिज्म समाजवाद से बहुत भिन्न नहीं है। कम्युनिज्म जितना मैं समझा हूँ, समाजवाद की स्वभाविक परिणति है।

गांधी जी ने उस समय में ये बात कही थी जिस समय में विभिन्न प्रकार की कम्युनिस्ट विरोधी ताकतों ने शीत युद्ध छेड़ दिया था। ऐसी परिस्थिति में कम्युनिज्म के सार को समझे बिना सामाजिक विकास का लक्ष्य घोषित करना साहस की बात थी। अपने एक लेख में गांधी जी ने कम्युनिज्म को एक ऐसी व्यवस्था के रूप में स्वीकार किया है जो निजी स्वामित्व से मुक्त होगी। अगर कम्युनिज्म की स्थापना हिंसा के बिना हो जायेगी तो उसका खुशी से स्वागत किया जायेगा। कारण यह है कि तब जनता की और जनता के लिए सम्पति को छोड़कर किसी की कोई सम्पति नहीं होगी।

नेहरू ने सन् 1942 में गांधी के साथ मिलकर भारत छोड़ो प्रस्ताव की तैयारी में भाग लिया जिसे कांग्रेस ने स्वीकार कर लिया इसमें सोवियत जन के प्रति सहानुभूति व्यक्त की गयी और बढ़े हुए फासिस्ट कब्जेदारों के विरूद्ध मातृभूमि की रक्षा के लिए सोवियत लोगों की वीरता की प्रशंसा की गयी। आन्दोलन के दौरान नेहरू को जेल भेज दिया गया जहाँ उन्हे तीन वर्ष बिताने पड़े, जेल में ही उन्हें स्तालिनग्राद, कुर्क का क्षेत्र और मोर्चा पर लाल फौज की शानदार विजय की खबरें मिलती रही। जेल के ही दिनों में नेहरू ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक हिन्दुस्तान की कहानी लिखी, जिसमें इस बात पर बल दिया कि महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध में सोवियत जनता के अटूट विश्वास के कारण हिन्दुस्तान और सोवियत संघ के भावी सम्बन्धों के बारे में सोचा। नेहरू ने भू–राजनीति के बारे में विचार किया और कहा कि "भू–राजनीति अब यथार्थवादियों का लंगर बन गयी है और ऐसा ख्याल किया जाता है कि उसके हृदय प्रदेश और तटवर्ती प्रदेश के शब्द जंजाल से राष्ट्रीय तरक्की और बरबादी के रहस्य पर रोशनी पड़ेगी"।

नेहरू के विचार में – रूस की समाजवादी अर्थव्यवस्था के लिए विस्तार जरूरी नही है क्योकि वह स्वयं में पर्याप्त हो सकती है। परंतु विस्तार की तरफ उसका झुकाव दिख रहा है क्योंकि दूसरी शक्तियां और पुराने शक काम कर रहें है, पुनः घिर जाने का भय दिखाई दे रहा है। आर्थिक और राजनैतिक दृष्टि से ठोस एवं संतुलित सोवियत संघ के अतिरिक्त किसी और देश की तस्वीर नही दिखाई दे रही परन्तु तुरंत के उसकी कार्यवाहियों से उसके बहुत से प्रशंसकों को धक्का पहुंचा है। सोवियत संघ के वर्तमान नेताओं के हैसियत पर अंगुली नहीं उठाया जा सकता और भविष्य की हर गतिविधी उनके दृष्टिकोण पर निर्भर करेगी। इन परिस्थितियों को देखते हुए नेहरू का मानना था कि संयुक्त राज्य अमेरिका ने अपने विशाल उत्पादन और अपनी संगठन शक्ति से दुनिया को आश्चर्यचकित कर दिया है। इस प्रकार अमेरिका ने केवल युद्ध में ही भाग नहीं लिया है बल्कि अपनी अर्थव्यवस्था की प्रकिया को तीव्र कर लिया है और अपने समक्ष एक भारी समस्या खड़ी कर ली है। अमेरिका की इन सारी गतिविधियों से ऐसा प्रतीत होता है कि आने वाले समय में यूरोपीय झगड़ो से खुद को अलग रखने का इरादा नहीं है।

भारत की विदेश नीति के विभिन्न पक्षों को देखते हुए नेहरू ने सोवियत संघ के साथ सम्बन्धों पर जोर दिया। भारत की स्वतंत्रता की घोषणा से एक साल पहले 7 सितम्बर 1946 को रेडियो पर बोलते हुए उन्होंने राष्ट्रीय दृष्टि से सम्पूर्ण सत्ता प्राप्त कर लेने पर उसकी अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के मूल सिद्धान्त बताये। उन्होंने कहा कि भारत आपसी प्रतिस्पर्धा में डटें राज्यों के गुटों से अलग रहने का इरादा रखता है। वह सभी देशों के साथ मित्रतापूर्ण सम्बन्ध स्थापित करने का प्रयास करेगा। सभी गुलाम देश और उपनिवेशों और गुलाम देशों की अजादी में रूचि लेगा। इसके साथ–साथ उन्होने ऐलान किया ''हम वर्तमान संसार के एक और देश, सोवियत संघ का अभिनंदन

करते है। दुनिया में घटनाओं की जिम्मेदारी उसके भी ऊपर है। एशिया में वह हमारा पड़ोसी है और हमें लाजिमी तौर पर बहुत सी समान समस्याओं को हल करना पड़ेगा और एक–दूसरे से वास्ता रखना पड़ेगा।''

नेहरू द्वारा जिस शांतिप्रिय नीति को निरूपित किया गया वह ''नेहरू कोर्स'' के नाम से विख्यात है जिसमें उपनिवेशवाद से पृथक रहकर और उसका विरोध करते हुए भारत की पूर्णरूप से स्वतंत्र नीति का निर्माण करना था। नेहरू की विदेश नीति का प्रमुख पहलू था कि किसी भी सैनिक गुट में शामिल न होना। यह बात स्मरणीय है कि जब विस्टन चर्चिल ने संयुक्त राज्य अमेरिका के फुलटन में अपना शरारत भरा भाषण दिया था जिसके बाद, शीतयुद्ध का आरंभ हुआ उसके छह महीने बाद नेहरू ने अपनी विदेश नीति सम्बन्धी मान्यताओं की घोषणा की। 13 दिसम्बर 1946 को विधान परिषद में भाषण देते हुए नेहरू ने अपना यही विचार पुनः दोहराया था कि ''मुझे काफी बाद का इंकलाब याद आता है कि जिसने एक नये नमूने का राज्य पैदा किया यह रूस का इंकलाब था जिसके नतीजे में सोवियत समाजवादी प्रजातंत्र कायम हुआ। यही दूसरा बहुत ताकतवर मुल्क है जो दुनिया में जबरदस्त पार्ट अदा कर रहा है और यह सिर्फ ताकतवर मुल्क ही नहीं हिन्दुस्तान का पड़ोसी भी है।''

निष्कर्ष

भारत की स्वतंत्रता से पूर्व, भारत–रूस संबंध जोकि मध्य काल में व्यापारिक रूप में शुरू हुआ, उसने उन्नीसवीं–बीसवीं शताब्दी आते आते संस्कृतियों का भी आदान प्रदान का रूप धारण कर लिया जैसे की बंगाली थियेटर की स्थापन, विभिन्न रूसी और भारतीय साहित्यों के अनुवाद इत्यादि जिसने एक दूसरे की सामाजिक गतिविधियों को प्रभावित किया। भारत रूस के बीच सांस्कृतिक के चलते आपसी रुचि बढ़ी जिसने दोनों देशों के बीच राजनीतिक संबंधों को विकसित कर मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

संदर्भ

1. प्रसाद, बिमल. (1973). इण्डो सोवियत रिलेशन 1947–1972 ए डॉक्यूमेन्टरी स्टडी. एलायड पब्लिशर्सः नई दिल्ली, बाम्बे, कलकत्ता. पृष्ठ **1.**
2. वही।
3. चटोपाध्याय, डा० देवीप्रसाद., रायें, ए०. (1982). इण्डिया एण्ड सोवियत यूनियन, अ क्रोनोलॉजी ऑफ पोलिटिकल एण्ड डिप्लोमेटिक कोऑपरेशन. फर्म के.एल.एम.ः कलकत्ता. पृष्ठ **6.**
4. सिंह, एस०पी०. (1987). पॉलटिकल डायमेंशन ऑफ इण्डिया यू एस एस आर रिलेशन. एलॉयड पब्लिशर प्रा. लि.ः नई दिल्ली. पृष्ठ **1.**
5. सिंह, एस०पी०. पॉलिटिकल डायमेसन ऑफ इडिया एण्ड यू० एस० एस० आर रिलेशन. *कमप्लीट वर्क्स ऑफ लियो टॉलस्टॉय.* वॉल्यूम 48. (रसियन). एलायड पब्लिर्शसः नई दिल्ली. पृष्ठ **1.**
6. दोबुलीबोव. एन०. (1857). ए गलान्स एट द हिस्ट्री एण्ड प्रजेन्ट सिचुएशन इन ईस्ट इण्डिया. रूस. सिंह. एस०पी०. पॉलिटिकल डामेन्शन ऑफ इण्डिया एण्ड यूएस एस आर रिलेशन्स. एलॉयड पब्लिशर प्रा. लि.ः मायापुरी फेज, नई दिल्ली. पृष्ठ **2.**

7. चट्टोपाध्याय, डा० देवीप्रसाद. (1982). कम्पाईल्ड बाई ए. रॉय, इण्डिया एण्ड सोवियत यूनियन ए क्रोनोलॉजी ऑफ पॉलिटिकल एण्ड डिप्लोमेटिक कोपरेशन. फर्मा के एल एम प्रा. लि.: कलकत्ता. पृष्ठ **6.**
8. सिंह, एस०पी०. (1987). पॉलटिकल डायमेंशन ऑफ इण्डिया यू एस एस आर रिलेशन. एलॉयड पब्लिशर प्रा. लि.: नई दिल्ली. पृष्ठ **2.**
9. चट्टोपाध्याय, डा० देवीप्रसाद. (1982). कम्पाईल्ड बाईए. रॉय, इण्डिया एण्ड सावियत यूनियन, ए क्रोनोलॉजी ऑफ पॉलिटिकल एण्ड डिप्लोमेटिक कोपरेशन. फर्मा के एल एम प्रा. लि.: कलकत्ता. पृष्ठ **6.**
10. (1975). फॉर ए हिस्ट्री ऑफ द फीडम मूमेंट इन इण्डिया. खण्ड 2. पृष्ठ **219.** सन्दर्भ, कोमोरोव एरिक, लेनिन और भारत. एक ऐतिहासिक अध्ययन. प्रगति प्रकाशनः मास्को. पृष्ठ **71.**
11. ब्रसेल्स. (1908). संप्तियेमे कांग्रेस सोसियालिरत इतरनासिओनाल समाजवादी इंटरनेशनल की सातवीं कांग्रेस. पृष्ठ **219.** (1975). सन्दर्भ, कोमोरोच एरिक लेनिन और, भारत, एक ऐतिहासिक अध्ययन. प्रगति प्रकाशनः मास्को. पृष्ठ **71.**
12. (1975). 19 पोल्नोये सोब्रानिये सोधिनेनी. व्ला इ लेनिन खण्ड 44. पृष्ठ **6,3६.** सन्दर्भ, कोमोरोव एरिक लेनिन और भारत, एक ऐतिहासिक अध्ययन. प्रगति प्रकाशनः मॉस्को. पृष्ठ **88.**
13. (1935). कांग्रेस प्रेसीडेंशियल एड्रेसेज. खण्ड 2 1911–1935. मद्रास. पृष्ठ **311.** सन्दर्भ, (1975). कोमोरोव एरिक, लेनिन और भारत एक ऐतिहासिक अध्ययन. प्रगति प्रकाशनः मास्को. पृष्ठ **88.**
14. सी० शेहनवीस. (1961). टैगोर एण्ड द वर्ल्ड. कलकत्ता. पृष्ठ **41.**
15. कृपलानी, कृष्ण., अनुवाद साहा, रणजीत. (1908). रविन्द्र नाथ ठाकुर एक जीवनी. नेशनल बुक ट्रस्टः इंडिया. पृष्ठ **211.**
16. महात्मा गांधी का चिंतन. पृष्ठ **258.** लीतमान, अ०., चेलिशेव, ये०. सोवियत भारत मैत्री के स्रोत. अनुवादक श्याम दुबे. रादुगा प्रकाशन मास्को पीपुल्स पब्लिशिंग हाउसः नई दिल्ली. पृष्ठ **144.**
17. महात्मा गांधी कम्युनिज्म और कम्युनिस्ट. पृष्ठ **6.** लीतमान आ०, चेलिशेव ये०, सोवियत भारत मैत्री के स्रोत अनुवादक स्याम दुबे. रादुगा प्रकाशनः मास्को. पीपुल्स पब्लिशिंग हाउसः नई दिल्ली. पृष्ठ **144.**
18. नेहरू, जवाहरलाल. भारत की विदेश नीति राजनीतिक. प्रकाशन गृह मास्को. पृष्ठ **32.** चेलिशेव, ये०. सोवियत भारत मैत्री के स्रोत. अनुवादक श्याम दुबे. रादुगा प्रकाशनः मास्को. पीपुल्स पब्लिशिंग हाउसः नई दिल्ली. पृष्ठ **172.**
19. वही. पृष्ठ **32, 37.** चेलिशेव, ये०. सोवियत भारत मैत्री के स्रोत. अनुवादक श्याम दुबे. रादुगा प्रकाशनः मास्को. पीपुल्स पब्लिशिंग हाउसः नई दिल्ली. पृष्ठ **172.**